जनवरी: 2024 वर्ष : 7 अंक : 4

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से,

"जितना बड़ा संघर्ष होगा, जीत उतनी ही शानदार होगी" – स्वामी विवेकानंद

नए साल की शुरूआत एक नई उमंग, नई उम्मीदें, नए सपनें, नया लक्ष्य, नया जोश और नए वायदों के साथ होती है, ऐसे वायदे जो हम स्वयं के साथ करते हैं कि इस वर्ष में हमारी योजनाएँ और लक्ष्य क्या हैं। नए वर्ष का शुभारंभ हमारे लिए एक प्रेरणा और संकल्प का अवसर प्रदान करता है ताकि हम बीते वर्ष से सीख ले सकें और भावी उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर हो सकें। इसलिए हमें बीते हुए कल से सीख लेकर आने वाले कल का स्वागत पूरी खुशी के साथ करना चाहिए।

वर्ष 2024 एक अलिखित अध्याय है, जो प्रगति और समावेशिता की कहानियों को उकेरने की प्रतीक्षा कर रहा है। आइए, एक-दूसरे के सपनों का समर्थन करें, विविधता का जश्न मनाएं और चुनौतियों का सामना करने के लिए एकजुट रहें। साहस और जिज्ञासा के साथ अज्ञात को गले लगायें, क्योंकि इसके तहों में नवीनता और परिवर्तन की कुंजी छिपी हुई है।

मैं आशा करता हूँ कि आने वाला साल आपके जीवन में ढेरों खुशियाँ लेकर आये और अच्छे स्वास्थ्य व सफलता के साथ बीते। एक बार फिर से आप सभी को नए साल की ढेरों शुभकामनाएँ। एशले स्मिथ की शब्दों में, "जीवन सौन्दर्य से भरपूर है। इसे देखें। भंवरे को, छोटे बालक को, मुसकुराते चेहरों को देखें। बारिश की खुशबू को सूंघें, और हवा को महसूस करें। जीवन को पूरी तरह जिये, और अपने सपनों की पूर्ति के लिए पूरी कोशिश करें।"

नए वर्ष का स्वागत एक नए संकल्प के साथ,

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

आईसीएआर-सिफरीने 5 दिसंबर को विश्व मृदा दिवस मनाया

आईसीएआर-सिफरीने 5 दिसंबर को अपने मुख्यालय में संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित थीम “मृदा और जल: जीवन का स्रोत” पर ‘विश्व मृदा दिवस-2023’ मनाया, जिसमें सभी क्षेत्रीय केंद्रों को ऑफ़लाइन और ऑनलाइन दोनों तरीकों से जोड़ा गया। कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, छात्रों, शोधार्थियों, मछुआरों (कुल 30 प्रतिभागियों में 14 महिला मछुआरे शामिल थे) सहित कुल 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मृदा वैज्ञानिक डॉ. निहारेंदु साहा, कृषि रसायन विज्ञान और मृदा विज्ञान विभाग, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर, नादिया, पश्चिम बंगाल के प्रोफेसर मुख्य अतिथि थे। अपने उद्घाटन भाषण में आईसीएआर-सिफरीके निदेशक डॉ. बी.के. दास ने दर्शकों का स्वागत किया और मछली उत्पादन में मिट्टी, पानी, उनके अंतर्संबंधों और संतुलित पोषण के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने मछुआरों के बीच संदेश के प्रसार में आईसीएआर-सिफरीके प्रयासों के बारे में भी विस्तार से बताया और बताया कि कैसे अज्ञानता या लापरवाही मछली उत्पादन के पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदूषित कर सकती है। डॉ. दास ने इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न तकनीकों और उत्पादों के बारे में जानकारी दी, जो अंतर्देशीय खुले पानी के मछुआरों की आय बढ़ाने के लिए उपयोगी हैं। अपने भाषण में, मुख्य अतिथि, डॉ. साहा ने श्रोताओं को सामान्य रूप से कृषि और विशेष रूप से मत्स्य पालन में मिट्टी के महत्व और मृदा दिवस मनाने की आवश्यकता के बारे में बताया। उन्होंने आंकड़ों और सांख्यिकी के साथ चेतावनी दी कि ऊपरी मिट्टी का नुकसान, जिससे कृषि उत्पादन पर खतरा, क्षरण और प्रदूषण हो रहा है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र बिगड़ रहा है और प्रकृति के लिए आसन्न, अपरिहार्य और अपरिवर्तनीय परिणाम हो रहे हैं। उन्होंने ऐसे परिणामों से बचने के लिए अपनाए जाने वाले उपायों का भी उल्लेख किया। इस अवसर पर आईसीएआर-सिफरीने निचले गंगा क्षेत्र (पश्चिम बंगाल) के 20 प्रमुख बाढ़ वाले मैदानों के मछुआरों को जल और मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए, जिसमें पालन करने के लिए सिफारिशें बताई गईं, इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग 200 मछुआरे लाभान्वित हुए। किसानों ने इस अवसर का हिस्सा बनने पर अपनी खुशी व्यक्त की और वैज्ञानिक समुदाय के साथ अपने अनुभव साझा किए।

आईसीएआर-सिफरीने बांकुरा के कांगसाबती जलाशय में केज कल्चर को सफलतापूर्वक प्रारम्भ किया

आईसीएआर-सिफरीद्वारा 2 दिसंबर, 2023 को पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग के सहयोग से केज कल्चर साइट, कांगसाबती जलाशय, मुकुटमणिपुर में मछली पालन सह नीलामी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आईसीएआर-सिफरीके तकनीकी सहयोग और मार्गदर्शन में पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग द्वारा कार्यान्वित परियोजना "कांगसाबती जलाशय में केज कल्चर" के तहत आयोजित किया गया था। परियोजना का उद्देश्य पश्चिम बंगाल के जलाशयों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए केज कल्चर की क्षमता को प्रदर्शित करना और केज कल्चर के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों की क्षमता का निर्माण करना था।

कार्यक्रम में माननीय राज्य मंत्री श्री बिप्लब रॉय चौधरी ने भाग लिया। इस अवसर पर विशेष आयुक्त श्री अतनु कुमार रॉय आईएएस, कर्माध्यक्ष सुश्री सुजाता मंडल, एडीएम श्री विवेक बासमय, आईएएस, एसडीओ सुश्री नेहा बनर्जी, आईएएस, मत्स्य विभाग के अधिकारी जैसे अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में 7 सहकारी समितियों से जुड़े जलाशय के बड़ी संख्या में मछुआरों और स्थानीय मछली विक्रेताओं, व्यापारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत माननीय मंत्री श्री बिप्लब राउचौधरी द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुई, जिसके बाद संयुक्त सचिव मत्स्य विभाग सुश्री ए.एस. अल्वी ने स्वागत भाषण दिया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने वैज्ञानिक प्रबंधन और तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से राज्य के जलाशयों और आर्द्रभूमि से मछली उत्पादन में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. एम.ए. हसन, प्रमुख, मत्स्य संवर्धन और प्रबंधन प्रभाग, आईसीएआर-सिफरीने परियोजना की प्रगति और परियोजना के सफल कार्यान्वयन में संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों को साझा किया। उन्होंने बताया कि यह परियोजना मुकुटमणिपुर के कांगसाबती जलाशय में पिंजरे की खेती के प्रदर्शन के लिए शुरू की गई थी और परियोजना को प्रायोजित करने के लिए मत्स्य विभाग को धन्यवाद दिया। जलाशय में 32 पिंजरों की एक बैटरी स्थापित की गई थी और 8-9 महीने की अवधि में 80 टन मछली उत्पादन के लक्ष्य के साथ पंगेसियस बीज का भंडारण किया गया था। परियोजना 16 मई, 2023 को शुरू की गई थी। 6 महीने से भी कम समय में 48 टन मछली उत्पादन (लक्ष्य का 60%) प्राप्त किया गया है, जबकि लगभग 15% स्टॉक 500 ग्राम से अधिक के विपणन योग्य आकार तक पहुँच गया है। डॉ. हसन ने अंतर्देशीय खुले पानी से मछली उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए संस्थान द्वारा विकसित अन्य तकनीकों और दिशानिर्देशों के बारे में भी बात की। माननीय मंत्री श्री बिप्लब रॉयचौधरी ने परियोजना की उल्लेखनीय प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कार्यान्वयन अधिकारियों को प्रेरित किया और उत्पादन बढ़ाने और किसानों के लाभ के लिए उसी जलाशय और अन्य जलाशयों में पिंजरे की संस्कृति पर इसी तरह की पहल करने की आवश्यकता व्यक्त की। माननीय मंत्री ने परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए सिफरीकी सराहना की और निदेशक डॉ. बी. के. दास को उनकी प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद दिया। अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी पहल की सराहना की और परियोजना की प्रगति पर अपनी संतुष्टि व्यक्त की। कार्यक्रम में उपज की बिक्री के लिए पहली मछली नीलामी की शुरुआत भी हुई। मछली का विपणन मार्च 2024 तक जारी रहना है। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बेंगलुरु द्वारा बांदूरसागर, केरल में जनजागरूकता कार्यक्रम एवं कोरेकल नौकाओं का वितरण

आईसीएआर-सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, बेंगलुरु द्वारा “जलाशयों के मत्स्य प्रबंधन के माध्यम से मछली उत्पादन में वृद्धि” विषय पर एक जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 6 दिसंबर 2023 को केरल के बांदूरसागर में किया गया। यह कार्यक्रम जनजाति सब-प्लान (टीएसपी) योजना के अंतर्गत आयोजित किया गया जिसमें अनुसूचित जनजाति वर्ग के 10 मछुआरों को लाभ पहुंचाया गया। कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बी.के. दास के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कुल 50 मछुआरों ने इस जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया।

डॉ. प्रीथा पनिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र ने उद्घाटन भाषण दिया और देश में अंतर्देशीय मत्स्य विकास में आईसीएआर-सिफरी की भूमिका पर प्रकाश डाला। सुश्री जेस्ना पी. के., वैज्ञानिक ने मत्स्य संवर्धन हेतु एनक्लोजर कल्चर पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। श्री अशीक बाबू, सहायक निदेशक, मत्स्य पालन विभाग, केरल सरकार ने विभाग की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी और श्री हनीफा पी., मत्स्य विकास अधिकारी ने मछुआरों को संबोधित किया। बांदूरसागर एसटी-एससी मछुआरा सहकारी समिति के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम के दौरान सक्रिय सहभागिता निभाई और मछुआरों की आजीविका से जुड़ी समस्याओं को साझा किया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. प्रीथा पनिक्कर, सुश्री जेस्ना पी. के. ने किया तथा सह-समन्वयक के रूप में डॉ. विजयकुमार एम.ई. (एसटीओ) और डॉ. वी.एल. रम्या (वैज्ञानिक) शामिल रहे।

सचिव, डेयर एवं आईसीएआर महानिदेशक ने "सतत मत्स्य और दुग्ध पालन" पर अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन किया

भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के तहत “सतत मत्स्य और दुग्ध पालन” पर अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का उद्घाटन 6 दिसंबर 2023 को आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में मुख्य अतिथि डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव डीएआरई एवं महानिदेशक, आईसीएआर द्वारा किया गया। यह 14 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 से 19 दिसंबर 2023 तक आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक क्षेत्र के वैश्विक दक्षिण देशों की क्षमता निर्माण करना है। इस कार्यक्रम में कंबोडिया, लाओस पीडीआर, म्यांमार और वियतनाम (सीएलएमवी) से कुल 24 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

उद्घाटन सत्र में डॉ. जे.के. जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य एवं पशु विज्ञान), आईसीएआर; सुश्री पारमिता त्रिपाठी, आईएफएस, संयुक्त सचिव, इंडो-पैसिफिक डिवीजन, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार; तथा प्रो. श्याम सुंदर दाना, कुलपति, पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय उपस्थित रहे।

डॉ. हिमांशु पाठक ने वैश्विक स्तर पर खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में मत्स्य और दुग्ध पालन क्षेत्र की प्रासंगिकता पर बल दिया और प्रतिभागी देशों से विशेषज्ञता के योगदान को

रेखांकित किया। उद्घाटन सत्र के दौरान उन्होंने "प्रशिक्षण पुस्तिका" और "प्रशिक्षण मैनुअल" का विमोचन किया।

सुश्री पारमिता त्रिपाठी ने मेकोंग क्षेत्र के देशों के साथ भविष्य में सहयोग को मजबूत करने पर जोर दिया और प्रतिभागियों से प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से ज्ञान की खाई को पाटने का आग्रह किया।

डॉ. जे.के. जेना ने भारत के मत्स्य एवं दुग्ध अनुसंधान संस्थानों की भूमिका और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उनके सतत योगदान की जानकारी दी।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरीने सभी प्रतिभागियों और गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने क्षेत्रीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम की उपयोगिता पर बल दिया जिससे अंतर्देशीय मुक्त जल मत्स्य और दुग्ध प्रबंधन में लगे पेशेवरों के ज्ञान और कौशल को द्विपक्षीय सहयोग के माध्यम से सुदृढ़ किया जा सके।

प्रो. एस.एस. डाना, कुलपति, डब्ल्यूबीयूएएफएस ने प्रतिभागियों को मत्स्य और दुग्ध क्षेत्र में नवीनतम विकास को सीखकर अपने ज्ञान और कौशल को उन्नत करने के लिए प्रेरित किया।

19 दिसंबर को आयोजित समापन समारोह में डॉ. बी. मीना कुमारी, पूर्व उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), आईसीएआर एवं पूर्व अध्यक्ष, एनबीए मुख्य अतिथि के रूप में तथा डॉ. पी. कृष्णन, निदेशक, बीओबीपी-आईजीओ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर आईसीएआर-सिफरी द्वारा प्रकाशित पुस्तक "आंतरिक जल निकायों के लिए पकड़ अनुमान पद्धति" (Catch Estimation Methodology for Inland Water Bodies) का विमोचन

किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में मत्स्य और डेयरी क्षेत्र में हाल की प्रगति को शामिल किया गया, जिसमें 32 सैद्धांतिक, 9 व्यावहारिक सत्र और 4 क्षेत्रीय भ्रमण शामिल थे, जिनमें यूनेस्को द्वारा सांस्कृतिक रूप से महत्त्वपूर्ण विश्व धरोहर स्थल का भ्रमण भी सम्मिलित था। प्रत्येक भागीदार देश के टीम लीडरों द्वारा देश-वार प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिनमें उनके मत्स्य और डेयरी क्षेत्र की क्षमताओं को उजागर किया गया।

प्रतिभागियों ने विभिन्न क्षेत्रीय भ्रमण, सैद्धांतिक और व्यावहारिक सत्रों के माध्यम से प्राप्त तकनीकी ज्ञान पर संतोष व्यक्त किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम से पूर्ण संतुष्टि जताई। देश प्रतिनिधियों ने सतत विकास लक्ष्यों (SDG) की प्राप्ति के लिए भविष्य में मत्स्य और डेयरी क्षेत्र में सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित किया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. ए.के. साहू ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा और पृष्ठभूमि को संक्षेप में प्रस्तुत किया तथा प्रतिभागियों से विभिन्न विशेषज्ञों के व्याख्यान का प्रभावी उपयोग करने का आग्रह किया।

अंत में, प्रतिभागी देशों के प्रतिनिधियों ने तकनीकी ज्ञान के हस्तांतरण के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के अनुभव के प्रति अपने उत्साह को व्यक्त किया। उन्होंने इस अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए विदेश मंत्रालय और आईसीएआर-सिफरी का आभार प्रकट किया।

आईसीएआर-सिफरी ने ग्रीन कॉर्नर प्लेटफॉर्म की मेजबानी की

"ग्रीन कॉर्नर - सभी के लिए उपयुक्त पर्यावरण" श्रीमती सुदेशना पाल कर का स्वागत और अभिनंदन करने के लिए आयोजित एक कार्यक्रम है, जो एक एकल अभियानकर्ता हैं, जो "नदी बचाओ जीवन बचाओ" अभियान के लिए मुर्शिदाबाद से कोलकाता तक

400 किलोमीटर की एकल कयाकिंग कर रही हैं। 15 दिनों की लंबी कयाकिंग यात्रा को टीम वॉक ने 28 नवंबर 2023 को अहिरन घाट, मुर्शिदाबाद से हरी झंडी दिखाई। टीम वॉक ने कयाकिंग, जो मूल रूप से एक जल खेल है, को हमारे जीवन में पर्यावरण को बचाने के साधन के रूप में खेल को बनाए रखने के लिए एक माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया; उन्होंने अभियान के दौरान गंगा नदी के विभिन्न हितधारकों के साथ गंगा डॉल्फिन, सहायक नदियों और गंगा नदी से जुड़े अन्य जल निकायों सहित जलीय जीवन विविधता से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की थी। इस संबंध में, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने परिवेश बंधब मंच (पीबीएम), बैरकपुर के साथ मिलकर 11 दिसंबर 2023 को सिफरी मुख्यालय में 'ग्रीन कॉर्नर' का सफलतापूर्वक आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत आईसीएआर-सिफरी के मत्स्य संसाधन मूल्यांकन और सूचना विज्ञान प्रभाग के प्रमुख डॉ एस सामंत द्वारा "गंगा नदी में गंगा डॉल्फिन सहित जलीय जीवन के संरक्षण" पर एक प्रस्तुति के साथ हुई। जिसके बाद श्रीमती एस पाल कर ने अपने अभियान का समर्थन करने के लिए सिफरी के प्रति आभार व्यक्त किया और अपनी एकल यात्रा के अनुभव और जलीय जीवन जैव विविधता और इसके संरक्षण, प्रदूषण आदि के मुद्दों से संबंधित राय साझा की; साथ ही निकट भविष्य में "नदी बचाओ जीवन बचाओ" के उद्देश्य से सिफरी के साथ हाथ मिलाने की इच्छा भी व्यक्त की। इस अवसर पर पीबीएम की टीम द्वारा "नदी अनेशक" नामक एक बंगाली पत्रिका का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के दौरान एक संक्षिप्त संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया जिसमें कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और जलीय जीवन से संबंधित समस्याओं सहित अपने काम के अनुभव साझा किए। फिर, श्रीमती सुदेशना पाल कर, एक एकल अभियानकर्ता को आईसीएआर-सिफरी और पीबीएम टीम बैरकपुर द्वारा उनके बहुत सफल अभियान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन सिफरी और परिवेश बंधब टीम द्वारा "नदी बचाओ जीवन बचाओ" की शपथ के साथ हुआ।

आईसीएआर-सिफरी ने ईस्ट कोलकाता वेटलैंड, पश्चिम बंगाल में मछली रोग जांच पर प्रदर्शन किया

आईसीएआर–सिफरी द्वारा 7 दिसंबर, 2023 को ईस्ट कोलकाता वेटलैंड में पर्यावरणीय स्वास्थ्य और मछली रोग जांच पर एक ऑन-फार्म प्रदर्शन आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता; सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फिशरीज

एजुकेशन, मुंबई; पश्चिम बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड एनिमल साइंस, कोलकाता; और कॉलेज ऑफ फिशरीज, किशनगंज, बिहार एनिमल साइंसेज यूनिवर्सिटी के प्रशिक्षुओं तथा संबंधित मछुआरों के लिए आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को मुक्त जल पारिस्थितिकी तंत्र से संबंधित जलीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य की मूल अवधारणाओं से परिचित कराना और वेटलैंड मत्स्य पालन में विभिन्न जैविक और अजैविक घटकों के निगरानी मानकों की स्पष्ट समझ देना था। प्रदर्शन का उद्देश्य फील्ड डायग्नोसिस, सैंपलिंग और पर्यावरणीय तथा मछली स्वास्थ्य मानकों के विश्लेषण पर व्यावहारिक ज्ञान देना भी था।

यह फील्ड विजिट सह प्रदर्शन कार्यक्रम डॉ. बि.के. दास, निदेशक के मार्गदर्शन में डॉ. ए.के. बेरा, प्रधान वैज्ञानिक; डॉ. एम. शाया देवी, वैज्ञानिक; और श्री सुभ्रत दास, तकनीकी सहायक की टीम द्वारा आयोजित किया गया।

डॉ. ए.के. बेरा ने प्रशिक्षुओं को बताया कि किस प्रकार रोगग्रस्त मछलियों की जानकारी एकत्रित की जाती है, सैंपलिंग कैसे की जाती है और किसानों को उपचार और रोकथाम के उपाय कैसे सुझाए जाते हैं। उन्होंने मछली रोग के प्रकोप में मृदा और जल गुणवत्ता मानकों की प्रासंगिकता पर विशेष जोर दिया।

डॉ. एम. शाया देवी ने जीवाणु, विषाणु और फफूंदजनित रोगों की पहचान के लिए रोगग्रस्त मछलियों के संग्रहण और सैंपलिंग का प्रदर्शन किया।

श्री सुभ्रत दास ने मृदा और जल गुणवत्ता मानकों के सैंपलिंग और विश्लेषण का प्रदर्शन किया।

बिहार के सीतामढ़ी जिले के ग्रामीण युवाओं के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम काआयोजन

सीतामढ़ी बिहार के मिथिला क्षेत्र में एक भारतीय शहर है, जिले का नाम देवी सीता के जन्मस्थान के सम्मान में रखा गया था। इस जिले के कुल 31 युवा मछली पालकों को 5-11 दिसंबर 2023 के दौरान प्रशिक्षण दिया गया। आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान ने जल गुणवत्ता प्रबंधन, नर्सरी और तालाब संस्कृति के पालन, आजीविका सुधार के लिए संलग्नक संस्कृति और प्रेरित प्रजनन और हैचरी प्रबंधन में कौशल विकसित करने के लिए "अंतर्देशीय मत्स्य प्रबंधन" पर इस सात दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया।

प्रतिभागियों को मछली चारा प्रबंधन और मछली रोग प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण सत्रों के दौरान जलवायु परिवर्तन और अंतर्देशीय मत्स्य पालन पर इसके प्रभाव का एक सामान्य अवलोकन शामिल किया गया। मछली पालकों को संस्थान की रीसर्कुलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी हैचरी इकाइयों और मछली चारा मिल से भी परिचित कराया गया।

डॉ. बि.के. दास, आईसीएआर-सिफरी ने किसानों से बातचीत की और उन्हें स्थायी आजीविका हासिल करने के लिए अपने ज्ञान को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने मछुआरों से वैज्ञानिक ज्ञान और अनुप्रयोगों को प्राप्त करके इष्टतम उत्पादन और उत्पादकता के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का पता लगाने का भी आग्रह किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मछली पालन के विभिन्न विषयों जैसे तालाब निर्माण और तैयारी, जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन तकनीक, मिश्रित मछली पालन, नर्सरी और पालन तालाब प्रबंधन, मछली रोग प्रबंधन, चारा तैयार करना, संलग्नक संस्कृति और सजावटी मछली पालन तकनीक पर जोर दिया गया। पानी और मिट्टी की गुणवत्ता विश्लेषण और मछली चारा तैयार करने पर व्यावहारिक सत्र थे। कार्यक्रम का उद्देश्य तालाबों और टैंकों सहित खुले पानी में मछली उत्पादन बढ़ाने और फील्ड एक्सपोजर यात्राओं के माध्यम से किसानों के व्यावहारिक कौशल को मजबूत करना है। हलिसहर मछली फार्म, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि, सजावटी मछली बाजार और आईसीएआर-सीआईएफए, कल्याणी अनुसंधान केंद्र का दौरा करने के लिए फील्ड ट्रिप का आयोजन किया गया था। सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम का समापन 11 दिसंबर 2023 को सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरण के साथ हुआ। प्रशिक्षुओं ने क्षमता निर्माण कार्यक्रम के साथ अपनी उच्च स्तर की संतुष्टि व्यक्त की।

आईसीएआर-सिफरी ने "भारी धातुओं और माइक्रोप्लास्टिक विश्लेषण में प्रगति (आईसीपी-एमएस और μ एफटीआईआर)" पर लघु पाठ्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर के सम्मेलन हॉल में "भारी धातुओं और माइक्रोप्लास्टिक विश्लेषण में प्रगति (आईसीपी-एमएस और μ एफटीआईआर)" पर एक लघु पाठ्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर आईसीएआर-सिफरी के सभी प्रभाग प्रमुख और संसाधन व्यक्ति उपस्थित रहे। 11-15 दिसंबर 2023 के दौरान आयोजित 5 दिवसीय लघु पाठ्यक्रम प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य आईसीपी-एमएस और μ एफटीआईआर जैसे परिष्कृत उपकरणों का उपयोग करके भारी धातुओं और माइक्रोप्लास्टिक विश्लेषण में उन्नत तकनीकों पर ज्ञान प्रदान करना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न संस्थानों और विश्वविद्यालयों से माइक्रोबायोलॉजी, ऑर्गेनिक केमिस्ट्री, फिशरीज और जूलॉजी जैसे विभिन्न शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले वैज्ञानिक, सहायक प्रोफेसर, तकनीकी अधिकारी, छात्र और शोधार्थी सहित कुल 24 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।

प्रारंभ में, प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. एस. के. नाग ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का अवलोकन कराया। प्रभागाध्यक्षों ने अपने वक्तव्य में प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व और हाल के वर्षों में प्रदूषण आकलन के लिए उन्नत तकनीकों को सीखने पर जोर दिया।

अपने वक्तव्य में, डॉ. बि.के. दास ने पाठ्यक्रमों के दौरान समवर्ती व्यावहारिक सत्रों के साथ विश्लेषणात्मक उपकरणों के प्रदर्शन को प्रदान करने में प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने आग्रह किया कि एक स्वास्थ्य और एक ग्रह अवधारणा को प्राप्त करने के लिए उचित प्रबंधन के लिए प्रदूषित जल निकायों की निगरानी और रिपोर्टिंग अनिवार्य है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने और जैविक और अजैविक नमूनों में किसी भी विषाक्त पदार्थ की उपस्थिति के बारे में रिपोर्ट करने से पहले सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नमूना आकार का विश्लेषण किया जाना चाहिए क्योंकि इस खबर का समाज में व्यापक प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने वैश्विक आबादी के लिए जलीय खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया और खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से जनता को जागरूक करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का समापन प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. डी. जे. सरकार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। समग्र प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. सोमा दास सरकार और डॉ. संथाना कुमार वी. ने किया और इसमें आईसीएआर-सिफरी के तकनीकी अधिकारी श्री लोकनाथ चक्रवर्ती ने तकनीकी सहायता दी।

बिहार के पूर्वी चंपारण जिले के किसानों की आय दोगुनी करने हेतु कौशल विकास कार्यक्रम

पूर्वी चंपारण, बिहार के मत्स्य किसानों के लिए आयोजित क्षमता संवर्धन सह कौशल विकास कार्यक्रम मछली पालन के आधुनिक और वैज्ञानिक तरीकों से किसानों को प्रशिक्षित कर उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित आयोजन और किसानों की समस्याओं का समाधान करने के प्रयास एक्वाकल्चर उद्योग की समग्र प्रगति और स्थिरता में सहायक होंगे।

इसी क्रम में, आईसीएआर–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान (आईसीएआर–सिफरी), बैरकपुर द्वारा 14 से 20 दिसंबर 2023 तक "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" विषय पर एक 7 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें पूर्वी चंपारण, बिहार के 30 किसानों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों की मछली पालन से संबंधित विभिन्न पहलुओं में तकनीकी दक्षता एवं ज्ञान को बढ़ाना और आंतरिक जल स्रोतों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए टिकाऊ प्रबंधन रणनीतियों को समझाना था।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सिफरी ने किसानों से बातचीत कर उन्हें वैज्ञानिक प्रशिक्षण के माध्यम से तकनीकी ज्ञान बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। डॉ. दास ने किसानों को सलाह दी कि वे अपने घरों के पिछवाड़े स्थित तालाबों एवं स्थानीय जल संसाधनों का वैज्ञानिक रूप से उपयोग करें, जिससे वे स्थायी आजीविका सुनिश्चित कर सकें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित विषयों पर विशेष बल दिया गया:

तालाब निर्माण एवं प्रबंधन, नर्सरी और पालन तालाबों

का प्रबंधन, मिश्रित मछली पालन एवं मछली रोग प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन एवं हैचरी प्रबंधन, समन्वित मछली पालन, मछली आहार निर्माण एवं प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीवों का उत्पादन, सजावटी मछली पालन (ऑर्नामेंटल फिश फार्मिंग)

इन विषयों को व्याख्यान, व्यवहारिक प्रदर्शन, समूह चर्चा और फील्ड विज़िट्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को जल गुणवत्ता विश्लेषण, मछली आहार निर्माण और रिसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (RAS) के कार्यप्रणाली से भी अवगत कराया गया। प्रशिक्षण के हिस्से के रूप में, किसानों को हालीशहर फिश फार्म, ईस्ट कोलकाता वेटलैंड, कोलकाता स्थित सजावटी मछली बाजार और आईसीएआर–सिफा फील्ड स्टेशन, कल्याणी का भ्रमण कराया गया। इसके अलावा, संस्थान के ऑर्नामेंटल फिश कल्चर यूनिट एवं बायोफ्लॉक इकाई का भी दौरा कराया गया।

20 दिसंबर 2023 को कार्यक्रम का समापन सत्र आयोजित किया गया, जिसमें निदेशक, आईसीएआर–सिफरी ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए। किसानों ने प्रशिक्षण की पाठ्यक्रम संरचना और इसके व्यावहारिक लाभों पर संतोष व्यक्त किया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन डॉ. अपर्णा रॉय, प्रभारी, ई एंड टी सेल; श्री गणेश चंद्र एवं श्री प्रणब गोगोई ने किया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग श्री सुजीत चौधरी, श्री लोकेनाथ चक्रवर्ती, श्री अंजन तालुकदार, श्री मानवेंद्र रॉय और डॉ. अविषेक साहा द्वारा प्रदान किया गया।

आईसीएआर–एनआरआरआई द्वारा आयोजित TEZ-2023 में आईसीएआर–सिफरी खेल दल ने भाग लिया

आईसीएआर ज़ोनल खेलकूद प्रतियोगिता–2023 का चार दिवसीय आयोजन आईसीएआर–नेशनल राइस रिसर्च इंस्टीट्यूट (NRRI), कटक, ओडिशा में 13 से 16 दिसंबर 2023 तक संपन्न हुआ, जिसमें आईसीएआर–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान (आईसीएआर–सिफरी), बैरकपुर से 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस खेल महोत्सव का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों में उत्साह, दृढ़ संकल्प एवं टीम भावना को बढ़ावा देना है, ताकि वे देशभर में किसी भी स्तर पर आने वाली चुनौतियों का सामना प्रभावी ढंग से कर सकें।

आईसीएआर खेल योजना की शुरुआत 1979 में संगठन की स्वर्ण जयंती के अवसर पर की गई थी। तब से यह विभिन्न संस्थानों में चक्रानुक्रमिक (रोटेशनल) आधार पर आयोजित की जा रही है। आईसीएआर इस योजना को संस्थागत और मुख्यालय स्तर पर आयोजित विभिन्न खेलों के माध्यम से सुव्यवस्थित करता है। संस्थागत स्तर पर विजयी प्रतिभागी ज़ोनल स्तर तक आगे बढ़ते हैं। ज़ोनल स्तर पर जीतने के बाद, चयनित संस्थानों में से किसी एक में अंतर-ज़ोनल फाइनल टूर्नामेंट आयोजित किया जाता है। आईसीएआर–सिफरी खेल दल ने विभिन्न

व्यक्तिगत और टीम प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया, जिनमें दौड़, फुटबॉल, वॉलीबॉल (स्मैशिंग), वॉलीबॉल (शूटिंग), क्रिकेट, बैडमिंटन (सिंगल, डबल, मिक्स डबल), कैरम, शतरंज आदि शामिल थे। 100 मीटर रिले प्रतियोगिता में डॉ. दीपा सुधेशन, सजीना ए. एम., अंजना एक्का, संगीता एम. नायर और कैंसियल जॉनसन की टीम ने रजत पदक (सिल्वर मेडल) जीता। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने खेल टीम के सभी खिलाड़ियों की निगरानी और मार्गदर्शन स्वयं किया। खेल आयोजन को सुव्यवस्थित रूप से संपन्न कराने हेतु वैज्ञानिक डॉ. दिबाकर भक्ता को चीफ़-डी-मिशन (CDM) और तकनीकी सहायक श्री कौशिक मंडल को मैनेजर के रूप में नामित किया गया था।

संस्थान ने सिक्किम के मत्स्य अधिकारियों और उद्यमियों के लिए "फीड निर्माण और कम लागत वाले आहार की तैयारी" पर 20-22 दिसंबर 2023 को गंगटोक में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया

आईसीएआर - केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान (सिफरी), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा उत्तर-पूर्वी राज्यों के मत्स्य अधिकारियों के लिए "फीड निर्माण और कम लागत वाले आहार की तैयारी" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 20 से 22 दिसंबर 2023 तक किया गया। यह कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर और डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य मत्स्य अधिकारियों और उद्यमियों को मछली पोषण के प्रति जागरूक करना और स्थानीय उपलब्ध सामग्री से फीड निर्माण की व्यावहारिक जानकारी देना था।

20 दिसंबर 2023 को उद्घाटन सत्र आयोजित किया गया। डॉ. सोना येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समन्वयक, ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और जलकृषि में मछली पोषण एवं आहार की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण में सिक्किम मत्स्य निदेशालय, फिश फीड उद्यमियों और राज्य के प्रगतिशील मछुआरों सहित कुल 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री नरेश सुनार, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, सिक्किम ने बताया कि राज्य में 1600 किमी लंबी नदियाँ, 850 हेक्टेयर जलाशय, 2285 हेक्टेयर झीलें और ग्राम तालाब हैं, जिनमें 806 ट्राउट इकाइयाँ और 1766 कार्प इकाइयाँ हैं जो कुल 455 मीट्रिक टन मछली उत्पादन करती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि राज्य पूरी तरह से बाहरी स्रोतों पर फिश फीड के लिए निर्भर है, इसलिए राज्य में फीड मिलों की स्थापना और अधिकारियों व किसानों को प्रशिक्षण देने की तत्काल आवश्यकता है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में तीन दिनों तक सैद्धांतिक व व्यावहारिक सत्र, फीड निर्माण एवं तैयारी का व्यावहारिक अभ्यास शामिल था। अन्य महत्वपूर्ण विषयों में मछली पोषण, फीड निर्माण,

ट्राउट फार्मों के लिए फीड बजटिंग, भंडारण एवं फीडिंग पद्धतियाँ शामिल थीं।

22 दिसंबर 2023 को समापन समारोह आयोजित किया गया। डॉ. सोना येंगकोकपम ने मुख्य अतिथि श्री के. के. श्रेष्ठा, निदेशक, मत्स्य विभाग, सिक्किम, के साथ-साथ श्री सी. एस. राई, अतिरिक्त निदेशक, और श्री नितेश गुरंग, उप निदेशक, तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रशिक्षण की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की सराहना की और राज्य के विभिन्न जिलों में इस तरह के और प्रशिक्षण आयोजित करने का अनुरोध किया। श्री नरेश सुनार ने बताया कि हाल ही में आई बाढ़ के दौरान राज्य को फीड की भारी कमी का सामना करना पड़ा था, और यह प्रशिक्षण उनके लिए बहुत उपयोगी और समयानुकूल रहा। प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान के आधार पर किसान अब स्वयं स्थानीय स्तर पर फीड तैयार कर सकते हैं।

मुख्य अतिथि श्री के. के. श्रेष्ठा ने आईसीएआर-सिफरी का आभार व्यक्त किया और कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम बहुत उपयोगी रहा तथा स्थानीय सामग्री पर विशेष जोर दिया गया। अंत में श्रीमती नीति शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आईसीएआर-सिफरी द्वारा गुवाहाटी में 'पूर्वोत्तर भारत की ओपनवाटर मत्स्य पालन को बढ़ाने की विधियाँ और प्रथाएँ' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

आईसीएआर–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान (सिफरी), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा नेशनल फिशरीज डेवलपमेंट बोर्ड (NFDB), हैदराबाद के सहयोग से पूर्वोत्तर राज्यों के मत्स्य अधिकारियों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य ओपनवाटर मत्स्य संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन की जानकारी साझा करना था।

उद्घाटन समारोह 12 दिसंबर को डॉ. वी. के. गुप्ता (निदेशक, आईसीएआर-एनआरसी पिग, गुवाहाटी) और डॉ. मोहन एन. एच. (प्रमुख वैज्ञानिक, आईसीएआर-एनआरसीपी) की उपस्थिति में आयोजित हुआ। डॉ. एस. के. माझी (प्रमुख, सिफरी आरसी, गुवाहाटी) ने पूर्वोत्तर क्षेत्र की मत्स्य संसाधनों और उत्पादन की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि क्षेत्र में कुल 3.77 लाख हेक्टेयर जल संसाधन हैं और 2021-22 में कुल मछली उत्पादन 5.69 लाख मीट्रिक टन रहा, जो क्षेत्र की 85% मांग को पूरा करता है।

डॉ. गुप्ता और डॉ. मोहन ने समेकित कृषि प्रणाली जैसे मछली पालन के साथ सूअर पालन व धान की खेती के संयोजन पर बल दिया, जिससे खाद्य व पोषण सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

प्रशिक्षण में दो दिन कक्षा शिक्षण और एक दिन फील्ड विज़िट (NGO कलोंग-कपिली, असम) शामिल था। 25 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

समापन समारोह 14 दिसंबर को आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य

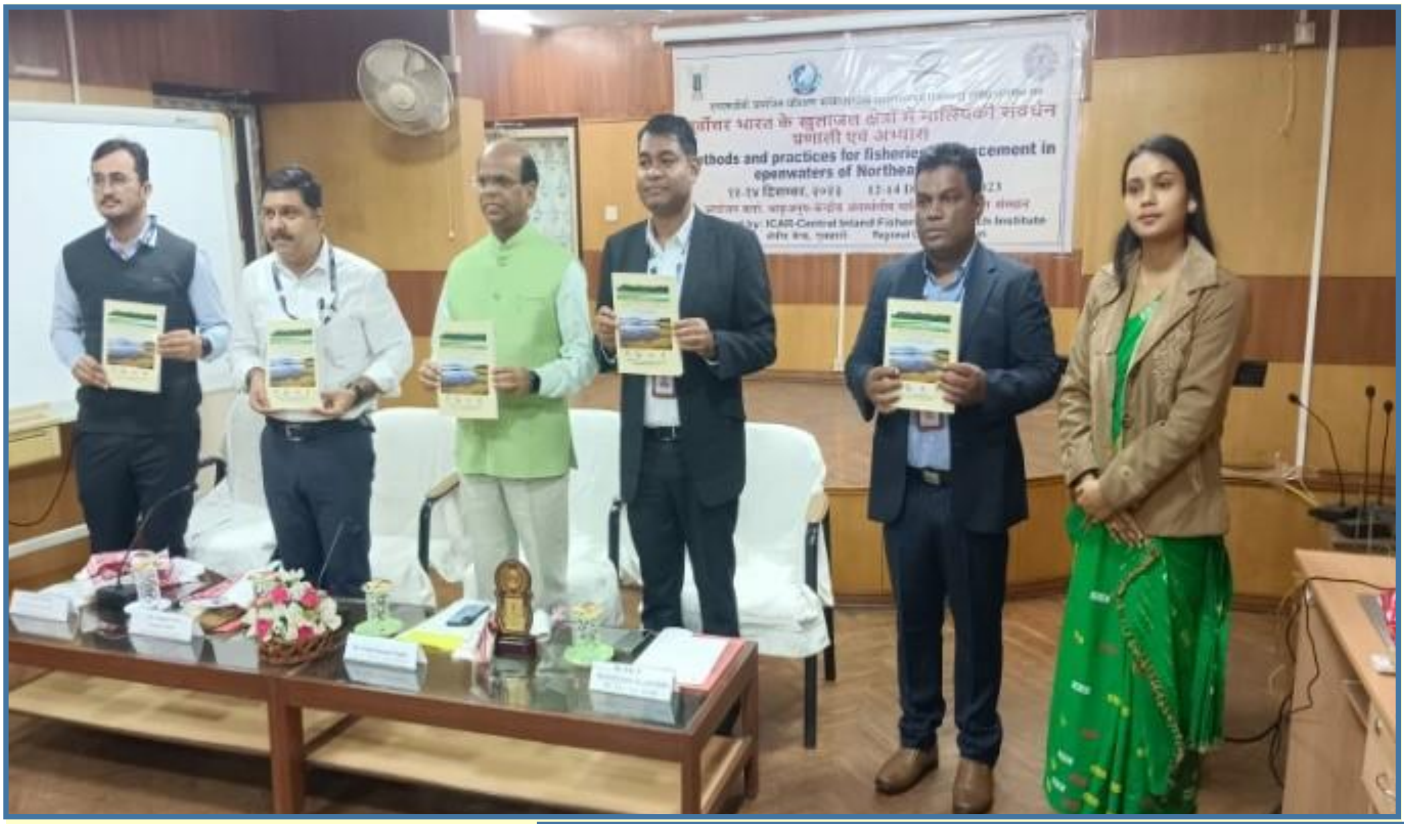

अतिथि डॉ. बी. सी. डेका (कुलपति, असम एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी) उपस्थित थे। उन्होंने पूर्वोत्तर की जैव विविधता की रक्षा और ओपनवाटर फिशिंग की क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही मत्स्य बीज स्रोतों की ट्रैकिंग, प्रजनन नियंत्रण, और नीतिगत हस्तक्षेप की जरूरत भी बताई।

डॉ. प्रोनोब दास (वरिष्ठ वैज्ञानिक) ने प्रशिक्षण का सार प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण को ज्ञानवर्धक और व्यवहारिक रूप से उपयोगी बताया। अंत में डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया और सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए।

सिक्किम के तीन जिलों में मत्स्य किसानों के लिए जागरूकता एवं सामग्री वितरण कार्यक्रम आयोजित

आईसीएआर–केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान (आईसीएआर–सिफरी), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा सिक्किम सरकार के मत्स्य निदेशालय के सहयोग से 20 और 21 दिसंबर, 2023 को सिक्किम के ग्यालशिंग, सोरेङ एवं नामची जिलों में जागरूकता-सह सामग्री वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य राज्य में सजावटी मत्स्य पालन को प्रोत्साहित करना रहा।

कार्यक्रम के अंतर्गत 35 लाभार्थियों को FRP टैंक एवं सहायक उपकरण वितरित किए गए — ग्यालशिंग एवं सोरेङ जिलों में 10-10 तथा नामची जिले में 15 किसानों को यह सामग्री दी गई। यह वितरण आईसीएआर-सिफरी की SCSP एवं NEH योजनाओं के अंतर्गत किया गया।

इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर–सिफरी, बराकपुर और डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन में तथा श्री के. के. श्रेष्ठ, निदेशक, मत्स्य निदेशालय, सिक्किम के सहयोग से संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में सुश्री नीति शर्मा (वैज्ञानिक, सिफरी-गुवाहाटी) ने किसानों से संवाद कर सजावटी मत्स्य पालन की संभावनाओं पर चर्चा की। मत्स्य निदेशालय के वरिष्ठ अधिकारियों — श्री लोबसांग तमांग, श्री सुरेंद्र भंडारी, श्री दुचेंग लेपचा, श्री युवराज शर्मा एवं श्री रोचक सुब्बा — ने किसानों से संसाधनों का सदुपयोग सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

कार्यक्रम के अंत में, संबंधित जिलों के सहायक निदेशकों द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त, सिफरी और मत्स्य विभाग के अधिकारियों ने सोरेङ जिले के श्रीबदम गांव में स्थित रेनबो ट्राउट फार्मों का निरीक्षण भी किया।

झारखंड के विभागीय अधिकारियों को प्रभावी स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए 'Report Fish Disease' एप्लीकेशन के बारे में जागरूक किया गया

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) द्वारा वित्त पोषित एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के तहत प्रभावी स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए मछली रोग निगरानी और मछली रोग की रिपोर्ट करें एप्लीकेशन कार्यक्रम पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर, कोलकाता में किया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बी.के. दास की देखरेख में, ग्रामीण विकास विभाग, झारखंड के तहत झारखंड राज्य आजीविका संवर्धन सोसायटी के 26 अधिकारियों को 27 दिसंबर 2023 को नव विकसित एप्लीकेशन 'मछली रोग की रिपोर्ट करें' के बारे में जानकारी दी गई। ये अधिकारी झारखंड के सरायकेला, खूंटी और गुमला जिलों में मत्स्य क्षेत्र के विकास के लिए काम कर रहे थे। अधिकारियों के मोबाइल फोन पर एप्लीकेशन इंस्टॉल किया गया और कार्य सिद्धांत और लाभों की जानकारी दी गई। टीम ने उपस्थित लोगों को मछली के रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन के कई क्षेत्रों पर जानकारी दी, जिसमें जलीय पर्यावरण बनाम रोगाणुरोधी प्रतिरोध के मुद्दे, मछली रोग प्रबंधन की स्थिति, जलीय कृषि विकास के लिए टिकाऊ दृष्टिकोण आदि शामिल थे। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. विकास कुमार, श्री असीम कुमार जाना और एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के अनुसंधान विद्वान सौविक धर, अनुपम अधिकारी ने बड़ी कुशलता से किया।

"अंतर्स्थलीय खुले जल में मछली रोग निदान और स्वास्थ्य प्रबंधन" पर लघु पाठ्यक्रम प्रशिक्षण

आईसीएआर-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसन्धान संस्थान , बैरकपुर ने 18 से 22 दिसंबर, 2023 के दौरान संकाय, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए "अंतर्स्थलीय खुले जल में मछली रोग निदान और स्वास्थ्य प्रबंधन" पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। बारासात सरकारी कॉलेज, कोलकाता; मत्स्य पालन कॉलेज, गुमला; महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार, डायमंड हार्बर महिला विश्वविद्यालय, मिदनापुर सिटी कॉलेज, पश्चिम बंगाल के संकाय, यूजी और पीजी छात्र, शोधकर्ता और संकाय ने पूरे मन से भाग लिया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और अंतर्देशीय खुले जल निकायों में मछली स्वास्थ्य और मछली रोग निदान दृष्टिकोण के प्रबंधन की आवश्यकता पर जोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को खुले जल पारिस्थितिकी तंत्र के संबंध में मछली रोग निगरानी और निदान की मूल बातें बताना है, साथ ही विभिन्न जैविक और अजैविक घटकों के विभिन्न निगरानी मापदंडों पर स्पष्ट समझ बनाना है। प्रशिक्षण का उद्देश्य बेहतर प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से बिगड़ते पर्यावरण और मछली स्वास्थ्य के लिए शमन उपायों पर नवीनतम पद्धतियों और ज्ञान को प्रदान करना भी है। डॉ. बी.के. दास, डॉ. एस.के. मन्ना, डॉ. ए.के. बेरा, डॉ. आर. बैठा और डॉ. विकास. कुमार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय किया।

झारखंड "जोहर" अधिकारियों के लिए क्षमता विकास कार्यक्रम

ग्रामीण कृषकों की आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने और किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु झारखंड सरकार ने ग्रामीण विकास विभाग के अधीन झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी की स्थापना की है। इस सोसाइटी के अंतर्गत "झारखंड ऑपर्च्युनिटीज फॉर हार्नेसिंग रूरल ग्रोथ (JOHAR)" परियोजना चलाई जा रही है, जिसका उद्देश्य चयनित कृषिगत एवं गैर -कृषिगत क्षेत्रों में लाभार्थियों की पारिवारिक आय को बढ़ाना और विविधीकृत करना है। मत्स्य विकास इस परियोजना के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण घटक है।

इसी क्रम में, आईसीएआर–सिफरी, बराकपुर द्वारा 26 से 30 दिसंबर, 2023 तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "इनलैंड फिशरीज मैनेजमेंट" पर आयोजित किया गया, जिसमें झारखंड के खूंटी, सरायकेला एवं गुमला जिलों से आए 23 फील्ड स्तरीय जोहर परियोजना अधिकारियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को आधुनिक और वैज्ञानिक मत्स्य पालन तकनीकों जैसे कि मिश्रित मत्स्य पालन (composite fish culture), बायोफ्लॉक तकनीक, मत्स्य पालन में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग, जल प्रदूषण का प्रभाव, केज कल्चर, इनलैंड फिशरीज प्रबंधन में GIS की भूमिका, सिफरी केज ग्रो फीड और अन्य अनुसंधान पहल, सजावटी मत्स्य पालन, मत्स्य रोग प्रबंधन आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान दो मैदान भ्रमण भी आयोजित किए गए—एक दिन ईस्ट कोलकाता वेटलैंड और आईसीएआर–सीआईएफई, कोलकाता रिसर्च सेंटर, और एक दिन हालीशहर स्थित मत्स्य बीज फार्म का भ्रमण कराया गया।

उद्घाटन सत्र में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सिफरी ने

प्रतिभागियों से संवाद किया और उन्हें इस प्रशिक्षण का पूर्ण लाभ उठाकर अर्जित ज्ञान को ग्रामीण मत्स्य कृषकों तक पहुँचाने हेतु प्रेरित किया।

कार्यक्रम का उद्देश्य अधिकारियों की आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों एवं व्यावहारिक क्षमताओं को सशक्त करना रहा ताकि वे तालाबों एवं अन्य खुले जल क्षेत्रों में मछली उत्पादन को बढ़ा सकें। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. अपर्णा रॉय (वरिष्ठ वैज्ञानिक) एवं डॉ. विकास कुमार (वैज्ञानिक) द्वारा किया गया और इसमें श्री सुजीत चौधरी (ACTO), श्री मनबेंद्र रॉय (TO) और डॉ. अविषेक साहा (TA) ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

पीएमएमएसवाई योजना के अंतर्गत आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर में आयोजित प्रशिक्षण-सह-भ्रमण कार्यक्रम

प्रशिक्षण-सह-भ्रमण कार्यक्रम प्रतिभागियों को आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ। आईसीएआर- केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर ने झारखंड मत्स्य विभाग (DoF) के सहयोग से 22 से 24 दिसंबर 2023 तक तीन दिवसीय सजावटी मछली पालन पर आधारित प्रशिक्षण-सह-भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में झारखंड के पाँच जिलों - देवघर, धनबाद, रांची, दुमका और पूर्वी सिंहभूम की तीस महिला सजावटी मछली पालक किसानों ने भाग लिया।

इस प्रशिक्षण में सजावटी मछली पालन, एक्वेरियम निर्माण, ब्रूडर रख-रखाव एवं अंडे देने वाली और जीवित बच्चे देने वाली सजावटी मछलियों की प्रजनन प्रक्रिया से जुड़ी प्रबंधन रणनीतियों को समझाया गया। आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बी. के. दास ने महिला मछली पालकों से बातचीत की और उन्हें इस प्रशिक्षण-सह-भ्रमण के माध्यम से अपने तकनीकी ज्ञान को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. दास ने महिला मछली पालकों से आग्रह किया कि वे सजावटी मछली उत्पादन और विपणन के अब तक अप्रयुक्त अवसरों का उपयोग वैज्ञानिक तकनीकी उपायों के माध्यम से करें, जिससे उनके जीवनयापन और आर्थिक सुरक्षा में वृद्धि हो सके।

प्रतिभागियों को हावड़ा के दासनगर स्थित सजावटी मछली गांव ले जाया गया, जहाँ उन्हें ब्रूडर रख-रखाव, सजावटी मछली के नर्सरी पालन और प्रबंधन (विभिन्न प्रजातियों की सजावटी मछलियों की हैंडलिंग सहित) की जानकारी दी गई। प्रतिभागियों को सजावटी मछली प्रजनन प्रणाली और टैंक की सफाई पर भी प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही, उन्हें कोलकाता के गालिफ स्ट्रीट, जो देश के सबसे बड़े सजावटी मछली बाजारों में से एक है, का भ्रमण करवाया गया ताकि वे सजावटी मछलियों और उनके सामान के विपणन से परिचित हो सकें।

महिला मछली पालकों ने इस प्रशिक्षण-सह-भ्रमण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम पर संतोष व्यक्त किया, जो सजावटी मछली पालन और प्रजनन की विधियों के प्रति उनकी जागरूकता बढ़ाने में सहायक रहा। निदेशक, आईसीएआर-सिफरी के मार्गदर्शन में इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. अपर्णा रॉय (प्रभारी, ई एंड टी सेल), डॉ. सुमन कुमारी (वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर) द्वारा किया गया, जिसमें डॉ. अभिषेक साहा, श्री सुजीत चौधरी, श्री माणबेंद्र रॉय और सुश्री शुभ्रा सिंह ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- अरुणाचल प्रदेश के दिरांग नदी, कामेंग बेसिन से एक लुप्तप्राय प्रजाति, *कॉमन स्नोट्राउट, स्किज़ोथोरैक्स रिचर्डसोनी* की पकड़ संरचना से पता चला है कि 11-20 सेमी के वर्ग समूह में इसका प्रतिशत सबसे अधिक (58.45%) है। सतत मछली पालन और संरक्षण की दृष्टि से इस प्रजाति का दोहन अधिक हो रहा है जिसल निदान आवश्यक है।
- इन-विट्रो और कम्प्यूटेशनल अध्ययन के अनुसार एसेंसियल ऑयल (सिंबोपोगोन एसपी) की बहुत कम खुराक से भी *एरोमोनस हाइड्रोफिला* के एंटीबायोटिक (ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन) प्रतिरोधी स्ट्रेन को नष्ट किया जा सकता है।
- मेघालय के उमियाम जलाशय में सीआईएफआरआई-जीआई पिंजरों में *साइप्रिनस कार्पियो, बारबोनिमस गोनियोनोटस* और *लेबियो रोहिता* को 10-20 मछली घन मीटर के स्टॉकिंग घनत्व पर पाला गया। इससे औसतन मछली उत्पाद 5-6 किलोग्राम/घन मीटर देखा गया ।
- नवंबर 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग 12.964 टन था, जो नवंबर 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 11.4% की वृद्धि दर्शाता है।
- गंगा के बाढ़कृत मैदानी भाग के आर्सेनिक स्थानिक क्षेत्र से व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण मछलियों के बीच आर्सेनिक की जैव-संचरण दर पर अध्ययन से पता चला है कि सिरहिनस मृगाला जो अपरदभोजी होती है, में आर्सेनिक जैव आवर्धन की मात्रा (1.46) अन्य प्रजातियों जैसे, लेबियो कतला (0.964), एल. बाटा (0.646) और एल. रोहिता (0.635)। की तुलना में अधिक पाई गई है।
- पूर्वी कोलकाता वेटलैंड्स के मछली के नमूनों से अलग किए गए नमूनों, *स्टैफिलोकोकस ऑरियस, ई. कोलाई* और एरोमोनस एसपी के लिए रोगाणुरोधी संवेदनशीलता परीक्षण (एएसटी) में 70% ई. कोलाई आइसोलेट एम्पीसिलीन के प्रतिरोधी और 65% एई के प्रतिरोधी पाए गए ।

बैठक

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 29 नवंबर - 01 दिसंबर, 2023 को लखनऊ में इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ एक्वाटिक एनिमल एपिडेमियोलॉजी (आईएसएएई), राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद और जलीय जैव विविधता संरक्षण सोसायटी (एबीसीएस), आईसीएआर-एनबीएफजीआर, लखनऊ द्वारा आयोजित जलीय पशु महामारी विज्ञान (एक्वा एपी III) पर तीसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने VIROCON-2023, तिरुचिरापल्ली के तहत दिनांक 2 दिसंबर 2023 को "डब्ल्यूएसडी और एचपीएम के विशेष संदर्भ में रोग मुक्त झींगा पालन" पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला का आयोजन आईसीएआर -राष्ट्रीय केला अनुसंधान केंद्र, तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु और भारतीय वायरोलॉजिकल सोसाइटी (आईवीएस), नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से किया गया ।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक वर्चुअल मोड में 04 दिसंबर, 2023 को "कृषि जैव सूचना विज्ञान और कम्प्यूटेशनल जीव विज्ञान" पर नेटवर्क परियोजना के तहत मत्स्य पालन वर्ग के लिए तकनीकी समीक्षा समिति (टीआरसी) की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को बर्दवान विश्वविद्यालय (बीकेसीआरटीसी और सीआईईएसडी) और ईआईएससीपी-संसाधन भागीदार, पर्यावरण जैव प्रौद्योगिकी, कल्याणी विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "मछली पोषण और फ़ीड प्रबंधन" पर व्यावहारिक प्रशिक्षण के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया।
- संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. एस. के. दास ने दिनांक 10 दिसंबर, 2023 को ओयूएटी (OUAT) , भुवनेश्वर में लाइब्रेरी के प्रभारी के रूप में जे-गेट@सीईआरए की पूर्वी क्षेत्र की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज के केंद्र प्रमुख, डॉ. धर्मनाथ झा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने दिनांक 19 दिसंबर 2023 को कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), प्रयागराज-द्वितीय की दूसरी वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया।

प्रशिक्षण

- संस्थान में दिनांक 04-08 दिसंबर, 2023 के दौरान "अन्तर्स्थलीय खुलाजल मत्स्य पालन में जलीय स्वास्थ्य प्रबंधन में प्रगति" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षण और अनुसंधान संकाय प्रमुख और छात्र सहित 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान में दिनांक 05-11 दिसंबर, 2023 के दौरान सीतामढी, बिहार के मत्स्य किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर मत्स्य विभाग, बिहार प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बिहार के सीतामढी जिले के 31 किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 11-15 दिसंबर 2023 तक "भारी धातु और माइक्रोप्लास्टिक्स विश्लेषण (ICP-MS और μFTIR) में प्रगति" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। भारत के विभिन्न हिस्सों से शिक्षण और अनुसंधान संकाय प्रमुख और छात्रों सहित कुल 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 12-14 दिसंबर, 2023 के दौरान एनएफडीबी, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित "पूर्वोत्तर भारत के खुले पानी में मत्स्य पालन बढ़ाने के तरीके और अभ्यास" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों से 25 मत्स्य अधिकारियों (4 महिलाओं सहित) ने भाग लिया।
- संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में दिनांक 14-20 दिसंबर, 2023 के दौरान पूर्वी चंपारण, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर मात्स्यिकी विभाग, बिहार

सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें पूर्वी चंपारण जिले, बिहार के 31 किसानों ने भाग लिया।

- संस्थान में दिनांक 18-22 दिसंबर, 2023 के दौरान "अन्तर्स्थलीय खुले जल में मछली रोग निदान और स्वास्थ्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड, उत्तर प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षण और अनुसंधान संकाय और छात्रों सहित 16 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में दिनांक 22-24 नवंबर, 2023 के दौरान एनएफडीबी, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित "पूर्वोत्तर भारत में खुले जल में मत्स्य पालन प्रबंधन के लिए रणनीतियाँ" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस प्रशिक्षण में विभिन्न पूर्वोत्तर राज्यों से 25 मत्स्य अधिकारियों (10 महिलाओं सहित) ने भाग लिया ।

अन्य

- संस्थान में दिनांक 06 दिसंबर, 2023 को जूलॉजी विभाग, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल के द्वितीय वर्ष के छात्रों (एमएससी) के लिए एक एक्सपोज़र विजिट की व्यवस्था की गयी। इसमें 31 छात्रों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं, सजावटी और हैचरी इकाई का दौरा किया।
- संस्थान में दिनांक 19 दिसंबर, 2023 को केंद्रीय विद्यालय (वायु सेना), बैरकपुर के बारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए एक एक्सपोज़र विजिट की व्यवस्था की गई जिसमें 62 छात्रों ने संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं, सजावटी और हैचरी इकाई का दौरा किया।
- संस्थान ने दिनांक 6-10 दिसंबर, 2023 के दौरान गांधीनगर, गुजरात में स्टार्ट-अप कॉन्क्लेव 2023 की प्रदर्शनी में भाग लिया।
- मत्स्य पालन विभाग, सरकार के सहयोग से संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, असम में दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को 'पूर्वोत्तर भारत में पिंजरे में मछली पालन : स्थिति और भावी संभावनाएं' पर एक विचार-मंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलोर ने 06.12.2023 को बाणासुरसागर, वायनाड, केरल में " मछली उत्पादन वृद्धि के लिए जलाशयों में मात्स्यिकी प्रबंधन" पर एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। आदिवासी उप-योजना (टीएसपी कार्यक्रम) के तहत इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों की संख्या 50 थी जिसमें दस आदिवासी मछुआरों को मछली पकड़ने के उपकरण वितरित किए।
- संस्थान ने दिनांक 21 नवंबर, 2023 को अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) कार्यक्रम के तहत हशनाबाद, बशीरहाट, पश्चिम बंगाल के 102 अनुसूचित जाति लाभार्थियों के आय सृजन और आजीविका विकास की दिशा में तालाब में मछली पालन के लिए आदान वितरित किया।
- संस्थान ने दिनांक 16 दिसंबर, 2023 को अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) कार्यक्रम के तहत दक्षिण दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल के 50 अनुसूचित जाति लाभार्थियों को जागरूकता सह आदान वितरण कार्यक्रम में सजावटी मछली पालन द्वारा के माध्यम से आय सृजन और आजीविका विकास के लिए आदान वितरित किया ।
- असम के ब्रह्मपुत्र बेसिन के उरपाद बील में *एल. कतला* की अंगुलिकाओं (स्टॉकिंग घनत्व 6 अंगुलिका प्रति वर्ग मी. को एचडीपीई पेन (500 वर्ग मीटर क्षेत्र) में 6 महीने तक पालन किया गया। इस अवधि में 594.31 ± 29.72 किलोग्राम का शुद्ध मछली उत्पादन प्राप्त किया। यह समान परिस्थितिकी वाले पूर्वोत्तर क्षेत्र के अन्य आर्द्रभूमि में पेन में मछली पालन के लिए एक मॉडल हो सकता है।
- संस्थान ने दिनांक 04 दिसंबर, 2023 को संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर, पश्चिम बंगाल में कृषि महिला दिवस 2023 मनाया जिसमें संस्थान के अनुसंधान विद्वानों सहित सभी महिला स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

सिफरी मासिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है

ISSN 0970-616X